C7b U3 pedagogy of History

Q सहयोगी (Coprative) एवं सहभागी (collaborative) अधिगम में क्या अंतर है? उदाहरण देकर समझावे।

या

इतिहास शिक्षण में सहयोगी अधिगम एवं सहभागी अधिगम अध्ययन के क्षेत्र में किस प्रकार सहायक है स्पष्ट करें?

Ans :→ इतिहास शिक्षण की प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए सहज रूपों में कक्षा के स्थिति को एक शिक्षक सहयोगी रूपों में जोड़ने का कार्य करता है यहीं कार्य सहभागिता या सहयोगी रूपों में अधिगम को जोड़ता है। एक शिक्षक कक्षीयक्रियाकलाप मे शिक्षार्थी की भागीदारी को प्रोत्साहित कर उनके अधिगम मे संवर्द्धन कर सकते हैं। इसके लिए कुछ विशेष तरह के व्यवहार का त्याग देना चाहिए। शिक्षार्थी- सहभागिता अधिगम में उन्हें सक्रिय बनाती है तथा उनकी शंकाओं के निर्धारण का अवसर भी प्रदान करती है। इसका अन्य लाभ यह है कि शिक्षक को अपने कार्य के सम्बन्ध मे प्रतिपुष्टि भी प्राप्त होती है। इस आधार पर शिक्षकों छात्रों के अधिगम समस्या का निदान करते हैं।

सहभागी या सहयोगपूर्ण अधिगम की प्रक्रिया अधिगम प्राप्तकर्ता के अवसर पर निर्भर करता है।

इसी आधार पर इतिहास शिक्षण के क्षेत्र को निम्न रूपों में अंतर करता है जिससे सहयोगी एवं सहभागी अधिगम मे अन्तर संबंध बन जाता है।

<u>सहयोगी अधिगम</u> :→ एक शैक्षणिक प्रस्ताव है जिसका उद्देश्य कक्षा गतिविधियों को सैद्धांतिक और सामाजिक अधिगम अनुभव कराना है। बच्चों को समूह करने के अलावा भी सहयोगी अधिगम के अनेक गुण है और इसे सकारात्मक परस्पर निर्भरता का स्वरूप भी कहा जाता है यह बौद्धिक विकास एवं सृजनशीलता को बढ़ाता है और बालकों में प्रोत्साहन की भावना बढ़ती है यह व्यक्तिगत एवं सामूहिक सहयोग से भी अधिगम के क्रिया को बढ़ाता है और सहभागी निम्न कारको से भी प्रभावित होता है जैसे :-

(i) <u>कक्षा में बच्चों की संख्या</u> :- किसी कक्षा में छात्रों की संख्या अधिक होने से शिक्षार्थी-सहभागिता बहुत हद तक प्रभावित होती है। किसी भी क्रियाकलाप या प्रश्नोत्तर कार्यक्रम में सभी छात्रों को भाग लेने के अवसर नहीं मिल पाते हैं। इससे सहभागिता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

(ii) <u>कमरे का आकार</u> :- यदि कमरे का आकार उचित नहीं है तब भी कम संख्या में छात्रों की सही व्यवस्था नहीं हो पाती। रौशनी व पर्याप्त हवा की आपूर्ति बेहतर होने से कक्षा में ताजगी बनी रहती है तथा अधिगम हेतु ध्यान केन्द्रित होता है।

~~सहकारी अधि~~

सहयोगी अधिगम से अधिगमकर्ता में अन्तर्वैयक्तिक विकास होता है साथ ही व्यक्तिगत अनुवर्तन के लिए अवसर प्रदान होता है

सहकारी अधिगम :- सहकारी अधिगम मॉडल का विकास कम से कम तीन मुख्य अनुदेशात्मक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए किया गया है। ये लक्ष्य हैं शैक्षणिक उपलब्धि, विभिन्नता की स्वीकृति एवं सामाजिक कौशल का विकास। यह एक विशेष छोटी समूह उपागम है जिसमें प्रजातांत्रिक प्रक्रिया, व्यक्तिगत जिम्मेदारी समान अवसर व सामूहिक पारितोषक निहित है। आज के कक्षा मे कई प्रकार के सहकारी अधिगम क्रियाकलापों और माडल ~~और~~ उपयोग किया जाता है जैसे विद्यार्थी टीम का उपलब्धि विभाजन, जिग्सा और सामूहिक अन्वेषण। सभी सहकारी अधिगम पाठों मे हांलाकि निम्नांकित मुख्य विशेषताएँ होती है -

- शैक्षणिक सामग्रियों में सिद्धहस्त होने के लिए विद्यार्थी समूह मे कार्य करते है
- समूह उच्च, औसत और निम्न उपलब्धि वाले विद्यार्थियों को मिलाकर बनाते है
- जहाँ तक संभव हो समूह में विभिन्न जाति, लिंग और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों का समावेश होती है।
- परितोष पुरस्कार नियम व्यक्तिगत आधारित न होकर समूह आधारित होता है। अध्ययनों से पता चला है कि सहकारी उपागम शैक्षणिक उपलब्धि-

सहयोगात्मक व्यवहार, अंत: सांस्कृतिक समझ व संबंध तथा विकलांग विद्यार्थियों के प्रति दृष्टिकोण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

उपरोक्त दोनों अधिगम की प्रक्रिया अधिगम में क्रियाकलापों को जोड़ने का कार्य करता है। जैसे - एकांकी अभिनय ऐतिहासिक स्त्रोतों को प्रदर्शित करता है इस प्रदर्शन में सहयोगी एवं सहभागी अधिगम एक-दूसरे के पूरक के रूपों मे भागीदारी को सुनिश्चित करता है। यही सुनिश्चित आधार अधिगम की क्रिया को जोड़ने का कार्य करता है जिससे इस तरह का अधिगम, अधिगम केन्द्रित उपागम माना जाता है। यही उपागम आत्म विश्वास विकसित करता है।